हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह
P.G. - II Sem
विषय — संस्कृत महाकाव्य

संस्कृत महाकाव्य का स्वरूप :- साधारणतः काव्य के भेद तीन प्रकार के होते हैं। शैली की दृष्टि से, अर्थ की दृष्टि से और बन्धकी की दृष्टि से। शैली या आकार की दृष्टि से काव्य को गद्य - पद्य और मिश्रित (जिसको चंपू भी कहा जाता है) तीन भागों में विभाजि[त] किया जा सकता है। अर्थ की दृष्टि से भी काव्य के उत्तम, मध्यम और अधम तीन विभाग किये गये हैं। ब[न्ध] की दृष्टि से दो प्रकार की काव्य कृतियाँ दृष्टिगोचर हो[ती हैं]।

संस्कृत के प्राचीन आचार्यों, पाश्च[ात्य] समीक्षकों एवं आधुनिक हिन्दी आलोचकों ने महाकाव्य [के] लक्षण भी निर्धारित किए हैं तथा प्राचीन लक्षण[ों] में विस्तारपूर्वक महाकाव्य के विविध अंगों की विवे[चना] किया है।

भामह ने महाकाव्य के लक्षण निर्धारित किया

1. महाकाव्य सर्गबद्ध होता है और वह महान

का निरूपण व महान होता है। और सुन्दर शब्द सुन्दर अर्थ, अलंकार से युक्त तथा सत्पुरुषाश्रित होना चाहिए।

2. उसमें मंत्र, दूत-प्रयाण, अभियान, युद्ध-नायक का अभ्युदय और पाँच संधियाँ होनी चाहिए।

3. उसमें धर्म आदि चारों वर्गों का वर्णन हो तथा समस्त रसों का पृथक-पृथक निरूपण हो।

4. उसमें कुल बल, शास्त्राध्ययन आदि से नायक का उत्कर्ष बताकर पुनः दूसरे का उत्कर्ष करने की अभिलाषा से नायक का वध न दिखाया जाय।

5. यदि महाकाव्य में नायक को व्यापकता प्रदान न करनी हो और उसका अभ्युदय भी दिखाना अभीष्ट हो तो उसका पहले स्तुति करना भी व्यर्थ है।

दण्डी के उक्त कथन का रूपान्तर डॉ० नगेन्द्र सिंह इस प्रकार प्रस्तुत किया है —

अनेक सर्गों में जहाँ कथा का वर्णन हो वह महाकाव्य कहलाता है। उसका लक्षण है — वह आशीर्वाद, नमस्क्रिया या वस्तु-निर्देश द्वारा आरम्भ होता है।

महाकाव्य नगर, समुद्र, पर्वत, ऋतु तथा चन्द्र सूर्य के उदय और अस्त, उपवन और जल-क्रीड़ा, मद

और प्रेमोत्सव आदि के वर्णनों से अलंकृत होना चाहिए। विभिन्न वृत्तान्तों से सुशोभित तथा रसात्मक वर्णन तथा इन्द्रसंयम होना चाहिए जिसमें रस तथा भावों की लड़ी जुड़ी हो। उसके सर्ग बहुत लम्बे लम्बे न हो। सर्गों के बन्ध श्रवणीय तथा अच्छी संधियों से युक्त होनी चाहिए। प्रथम नायक के गुणों का वर्णन करके फिर उसके तथा उसके शत्रुओं की पराजय का वर्णन करना चाहिए।

दण्डी के पश्चात रुद्रट के 'काव्यालंकार' में और हेमचन्द्र के 'काव्यानुशासन' में महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन किया है पर उनके विवेचन में कोई नवीनता नहीं है। अधिकांश समीक्षक साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के महाकाव्य विषयक विचारों को ही विशेष महत्व देते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्वनाथ ने 'साहित्य-दर्पण' में महाकाव्य का विशद और सांगोपांग व... किया है।——

1. महाकाव्य की कथा सर्गों में विभाजित होती है।
2. इसका नायक कोई देवता अथवा धीरोदत्त गुणों युक्त उच्च-कुलोत्पन्न क्षत्रिय होना चाहिए। एक वंश में उत्पन्न अनेक राजा भी इसके नायक हो सकते हैं।

3. इसमें श्रृंगार, वीर और शांत इन तीन रसों से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए और अन्य रस उसके सहायक होने चाहिए।
4. महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक या पौराणिक होता है।
5. इसमें चार वर्गों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से किसी एक फल के रूप में होना चाहिए।
6. इसके आरम्भ में नमस्कार, आशीर्वचन तथा मुख्य कथा की ओर संकेत के रूप में मंगलाचरण वर्तमान रहता है।
7. इसमें सर्गों की संख्या आठ से अधिक होनी चाहिए और इन सर्गों का आकार बहुत छोटा या बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए। प्रायः प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग होता है और सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन उचित है।
8. इसमें संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, दिन, प्रातःकाल, ऋतु, वन, समुद्र, संभोग, मुनि, स्वर्ग, नरक, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मंत्र, पुत्र आदि का सांगोपांग वर्णन होना चाहिए।
9. महाकाव्य में नामकरण कवि, कथावस्तु, नायक अथवा किसी व्यक्ति के नामकरण पर होना चाहिए।

इस प्रकार प्रायः प्रत्येक शास्त्रकार ने अपने में उपलब्ध महाकाव्यों के आधार पर महाकाव्य के लक्षण का विधान किया है।